पूज्य बाबूजी जुगल किशोर जी युगल, कोटा
मुंबई मुमुक्षु भाईयों के साथ तत्त्व-चर्चा
तारीख ०६-०४-२०१३, निज निवास स्थान – कोटा

महेंद्रभाई: बाबूजी! बहुत बड़ा जमाना था गुरुदेव का वक्त।

पूज्य बाबूजी: हम नए जमाने में थे। और गुरुदेव ने जितना भी कहा वो सारा का सारा नया invention है, नया अनुसंधान (है) सब कुछ।

महेंद्रभाई: (नया invention) सब कुछ पूरा, समग्र-सम्पूर्ण।

पूज्य बाबूजी: पूरा औंधा (उल्टा) था औंधा जो सारा सीधा हो गया।

महेंद्रभाई: सीधा हो गया। सीधा हो गया। क्रांति हो गई।

पूज्य बाबूजी: पूरा औंधा था, पूरा जैनदर्शन। पूरा औंधा था। रत्ती भर भी (सही) नहीं था जैनदर्शन, जैनधर्म। (गुरुदेव ने) सब सीधा कर दिया। Research (अनुसंधान) हुआ (है) research, research हुआ (है)।

महेंद्रभाई: Research हुआ है बाबूजी!

पूज्य बाबूजी: Research हुआ है। जिनवाणी तो अनादि से है जिनेन्द्र की वाणी, आचार्यों की वाणी (तो) अनादि से है। लेकिन सब लुप्त हो गया था - ऐसी बात है। सारा का सारा उद्‌घाटन गुरुदेव ने किया (है)। गुरुदेव बहुत बड़े वैज्ञानिक हुए, scientist।

महेंद्रभाई: बराबर बाबूजी, बराबर!

पूज्य बाबूजी: Scientist हुए हैं गुरुदेव। इस जमाने के जो सबसे बड़े scientist अगर कहे जायें, सबसे बड़े scientist अगर कहे जायें तो पूज्य गुरुदेव हैं। सारा नया अनुसंधान! जैनदर्शन के सारे सिद्धांत ओंधे थे। विद्वान बहुत बड़े-बड़े थे, लेकिन जो विद्वान थे (वे) आत्मार्थी नहीं थे।

महेंद्रभाई: विद्वान थे (मगर) आत्मार्थी नहीं थे - पक्की बात! पक्की बात! पक्की बात है। पूरी आध्यात्मिक क्रांति ला दी गुरुदेव ने।

पूज्य बाबूजी: हाँ! पूरी आध्यात्मिक-क्रांति ला दी। पूरी क्रांति!

जैसे आजादी का काम हुआ गाँधीजी के नेतृत्व में, ऐसे (ही) गुरुदेव का काम हुआ। वो तो बात दूसरी है आजादी की। उससे तो अपने को कोई लेना-देना नहीं (है)। वो तो... जैसे कोई बहुत गर्मी का मौसम हो और अचानक बरसात हो जाये, बिजली चमक जाये (इस प्रकार) ये गुरुदेव का उदय है।

अपन भाग्यशाली थे। अपना अगर भाग्य तौला जाये (तो) सबसे बड़ा भाग्य ये है...

महेंद्रभाई: कि गुरुदेव यहाँ आये ...

पूज्य बाबूजी: ये उपलब्धि है। (वो) आये लेकिन लाखों लोगों को नहीं मिले। लाखों को नहीं मिले (और) अपने को मिल गये।

महेंद्रभाई: अपने को मिल गए बाबूजी! सही बात है अपने को मिल गए।

पूज्य बाबूजी: सबसे बड़ी उपलब्धि! करोड़ों-अरबों सारे जगत का धन एक तरफ (और) ये एक तरफ। जैसे शुद्धात्मा एक तरफ और सारा जगत एक तरफ; (ऐसा ही) ये गुरुदेव का उदय हुआ।

महेंद्रभाई: कोई तुलना नहीं हो सकती किसी के (भी) साथ इस पुरुष की।

पूज्य बाबूजी: हाँ! नहीं हो सकती, नहीं हो सकती।

महेंद्रभाई: मिथ्यात्व क्या था परिचय नहीं था बाबूजी। और इस महापुरुष ने सबसे बड़ा जो अनंतकाल का घातक था, वो बात बताकर हमको कितना निहाल कर दिया।

पूज्य बाबूजी: उस पर आक्रमण किया है। वही है सबसे बड़ा शत्रु।

महेंद्रभाई: सबसे बड़ा शत्रु। मोक्ष पर्यंत इस पुरुष का उपकार हम भूल नहीं सकते बाबूजी।

पूज्य बाबूजी: नहीं भूल सकते हैं। आप जैसे लोग बच गये सारे।

महेंद्रभाई: आप जैसे लोग बच गये हमारे लिए बाबूजी, ये सबसे बड़ी बात है।

पूज्य बाबूजी: सारे सिद्धांत सीधे हो गये।

विद्वान भी गुरुदेव से पहले अनेकांत का ऐसा परिचय करते थे कि उस अनेकांत के नाम पर सम्यक् एकांत एक तरफ कर दिया (था)। सम्यक् एकांत का नाम (ही) नहीं था (उस) अनेकांत के नाम पर।

महेंद्रभाई: प्रयोजन की सिद्धि गुरुदेव ने कराई बाबूजी।

पूज्य बाबूजी: बिल्कुल ऐसा ही है।

महेंद्रभाई: पदार्थ की सिद्धि तो बहुत की लेकिन प्रयोजन की सिद्धि....

पूज्य बाबूजी: सब सुख चाहते हैं न! तो सुख की वास्तविक परिभाषा गुरुदेव ने दी (है)। कुछ समझते ही नहीं थे लोग। अनेकांत में से शुद्ध द्रव्य निकालते ही नहीं थे। शुद्ध भी है और अशुद्ध भी है - ये महामिथ्यादर्शन चलता रहा।

महेंद्रभाई: सही बात है! सही बात है! महामिथ्यादर्शन चल रहा था। पता ही नहीं था कि इसमें से सम्यक् एकांत क्या है।

पूज्य बाबूजी: क्या है? ७२वाँ श्लोक है नियमसार का - **शुद्ध और अशुद्ध की जो विकल्पना जो मिथ्यादृष्टि को सदैव होती है; सम्यग्दृष्टि (की ऐसी मान्यता है कि उस) के कारण शुद्ध और कार्य शुद्ध - दोनों (तत्त्व) शुद्ध हैं।**

महेंद्रभाई: बराबर! बराबर! बराबर है। सम्यग्दृष्टि के दोनों शुद्ध हैं।

पूज्य बाबूजी: **इस बात को परमागमके अतुल अर्थंकों सारासारके विचार वाली सुंदर बुद्धि से जो सम्यग्दृष्टि जानते हैं उनको हम वंदन करते हैं (ऐसा) आचार्य कहते हैं।** मिथ्यादृष्टि को शुद्ध भी है लेकिन अशुद्ध भी है। वहाँ मक्खन नहीं निकलता था, छांछ पीते थे (सब)।

महेंद्रभाई: बराबर, बराबर, बराबर, बाबूजी! छांछ पीते थे। कारण भी शुद्ध और कार्य भी शुद्ध।

पूज्य बाबूजी: कारण भी शुद्ध और कार्य भी शुद्ध। अहाहा!

महेंद्रभाई: अद्‌भुत बाबूजी! सम्यग्दृष्टि!

पूज्य बाबूजी: हाँ! और जो शुद्धात्माभिमुख पर्याय है शुद्धोपयोग की, वो ज्ञान की पर्याय ....तो क्या बोलती है? कि मैं शुद्ध हूँ। तो कार्य शुद्ध हुआ कि नहीं? अब इसमें सिद्ध दशा की कहाँ जरूरत रही?

महेंद्रभाई: नहीं जरूरत रही। बिल्कुल नहीं है बाबूजी, जरूरत।

पूज्य बाबूजी: मैं पूर्ण शुद्ध हूँ तो कहाँ जरूरत रही?

महेंद्रभाई: बिल्कुल नहीं! बिल्कुल नहीं!

पूज्य बाबूजी: और कारण तो शुद्ध है ही - शुद्धात्मा।

महेंद्रभाई: शुद्धात्मा पड़ा है, मौजूद। मैं हूँ वो।

पूज्य बाबूजी: कारण परमात्मा शुद्धात्मा ज्ञायक एक ही बात (है), सारा (सब कुछ)। परम तत्त्व! सम्यग्दृष्टि के तो दोनों शुद्ध हैं - कारण शुद्ध और कार्य शुद्ध। और मिथ्यादृष्टि के दोनों अशुद्ध हैं। वो शुद्ध कहता है पर अशुद्ध है (क्योंकि) मिलावट करता है ज्ञान और राग की।

महेंद्रभाई: बराबर! बराबर! विवेकबुद्धि नहीं है।

पूज्य बाबूजी: नहीं है। नहीं करता है। मक्खन तो है पर छांछ भी है।

महेंद्रभाई: वो मक्खन कैसे निकालना बाबूजी?

पूज्य बाबूजी: मक्खन तो निकालने के पहले ही जानता है वो कि ये जो बीस किलो की मथानी है, उसमें एक किलो या दो किलो या पाँच किलो मक्खन है। ये उसे मालूम है वृंदावन की गोपी को। वृंदावन की गोपी जानती है ये बात।

महेंद्रभाई: सही बात है बाबूजी, सही बात।

पूज्य बाबूजी: तो पहले से ही है वो भेदविज्ञान (उसको)। तो निकल जाता है (मक्खन क्योंकि) जानती है। जानती है, मक्खन का स्वरूप जानती है (वो)।

महेंद्रभाई: स्वरूप जाने और मक्खन ना निकले - ऐसा बनेगा नहीं।

पूज्य बाबूजी: ऐसा नहीं हो सकता है। ऐसा नहीं हो सकता है।

अज्ञानी आस्रव और बँध का नाश करके संवर, निर्जरा और मोक्ष को प्राप्त करना चाहता है। और भीतर ऐसी श्रद्धा है कि मैं प्राप्त करूँगा (और) शुद्ध हो जाऊँगा। पर क्या गलती करता है वो? (कि) उसके पास शुद्धता का मापदंड नहीं (है), आदर्श नहीं है। तो शुद्ध हो जाएगा तब कैसे जानेगा कि शुद्ध हो गया? किससे मिलान करेगा?

महेंद्रभाई: अद्‌भुत बाबूजी! अद्‌भुत! अद्‌भुत!

पूज्य बाबूजी: क्योंकि वो द्रव्य को स्वीकार ही नहीं करता (है), शुद्ध द्रव्य को। द्रव्य तो अतिशुद्ध है, अति। सिद्ध पर्याय (तो) शुद्ध है (और) द्रव्य अतिशुद्ध है। तो उसके पास है ही नहीं (मापदंड)। प्रमाण ही नहीं है उसके पास। उसके पास आदर्श नहीं है कि वो शुद्ध पर्याय कैसी होगी? कि जैसे इसमें कोई मिलावट नहीं है वैसे उसमें भी कोई मिलावट नहीं होगी।

महेंद्रभाई: बढ़िया बाबूजी! बहुत बढ़िया। आदर्श नहीं है। मापदंड नहीं है अज्ञानी के पास।

पूज्य बाबूजी: तो अब कैसे मिले? parallel, कैसे करेगा, समानता? जब अंगुली ही नहीं हुई शुद्ध (तो) किससे मिलान करेगा?

महेंद्रभाई: बाबूजी! इसके माध्यम से प्रवचनसार की ८० गाथा थोड़ी ले लीजिए न! इस ही माध्यम से.... अरिहंत के द्रव्य-गुण-पर्याय और अपना द्रव्य-गुण-पर्याय।

पूज्य बाबूजी: सुनी है क्या आपने?

महेंद्रभाई: इतनी नहीं सुनी (है)। आपके मुँह से नहीं सुनी।

पूज्य बाबूजी: नहीं! नहीं! कहीं कोई कैसेट-वैसेट में सुनी हो तो।

महेंद्रभाई: नहीं, नहीं। इतना खास लक्ष नहीं रहा। आपके मुँह से सुनने का बहुत भाव था कि किस तरह से मिलान है बाबूजी?

पूज्य बाबूजी: थक जाता हूँ तो थोड़ा आराम (करता हूँ बीच में)।

महेंद्रभाई: बाबूजी! पूरा rest... हमको कोई जल्दबाजी नहीं है। आपकी जहाँ तक बराबर capacity (सामर्थ्य) है तो ही बोलना। वरना हम बैठेंगे शांति से, बस।

पूज्य बाबूजी: वो गाथा ऐसी है बहुत बढ़िया गाथा है। बहुत ही बढ़िया गाथा है।

जो अरिहंत को द्रव्यत्व से, गुणत्व से पर्यायत्व से जानता है वह अपनी आत्मा को जानता है क्योंकि निश्चय से दोनों समान हैं - ये है न गाथा? तो अरिहंत को जाना पहले तो, वो मुख्य बात है।

फिर भगवान अरिहंत का द्रव्य भी शुद्ध है, गुण भी शुद्ध है और पर्याय भी शुद्ध है। तो ये शुद्ध कैसे हुआ - ये है प्रश्न तो। इसकी तो पर्याय अशुद्ध है। इसने जो भगवान अरिहंत को जाना है तो द्रव्य-गुण तो शुद्ध जाने, पर पर्याय भी शुद्ध है क्योंकि राग चला गया। समाप्त हो गया (राग) तो (ये) शुद्ध हो गई।

(तो) अब ये (अज्ञानी) कहता है कि लेकिन मेरी तो अशुद्ध है। (अरे!) कि तेरी भी अशुद्ध नहीं है, तेरी भी अरिहंत जैसी (ही) शुद्ध है। कैसे शुद्ध है? कि तेरी जो पर्याय है वो द्रव्य-गुण और पर्याय, पर्याय माने ज्ञान.... तू तो ज्ञानस्वरूप है। तू रागस्वरूप नहीं है। राग साथ में है लेकिन वो ज्ञान के साथ मिला हुआ नहीं है। तूने अनादिकाल से उस राग को ज्ञान के साथ अपनी मिथ्याकल्पना में मिलाया (मगर वो) मिला नहीं।

महेंद्रभाई: मिला नहीं, मिला नहीं। मिलावट की तूने।

पूज्य बाबूजी: तूने मिथ्याकल्पना से मिलावट की और वास्तव में वो मिले नहीं फिर भी।

महेंद्रभाई: आहाहा! वाह बाबूजी! वाह! अद्‌भुत! मिले नहीं हैं।

पूज्य बाबूजी: नहीं मिले वो। इसलिए वो अलग के अलग ही हैं तेरे भी; इतना समझ ले बस कि जैसे भगवान का ज्ञान (है) उसमें राग नहीं है, है (ही) नहीं। हो तो भी क्या? परद्रव्य पड़े हैं तो वो कहीं मिल जाते हैं ज्ञान के साथ? (नहीं!) तो राग भी परद्रव्य है। तो वो (राग) भगवान का तो चला गया, दूर चला गया। जैसे कोई पदार्थ पास था और दूर चला गया; या पास (में) है तो वो मिल थोड़े ही (ना) गया।

दूर है तो भी वहीं का वहीं है। इसी तरह भगवान का राग चला गया। और तेरा ये जो राग है ये ज्ञान के साथ तेरे अनंत प्रयत्न करने पर भी नहीं मिला (है)। तो इतना जान ले कि ये राग है लेकिन (ये) मैं नहीं हूँ। ये ज्ञान से अलग ही है, तो उसने ज्ञान को अलग कर लिया।

तो ये ज्ञान है थोड़ा। श्रुतज्ञान है मेरा (और) भगवान का केवलज्ञान है। तो भगवान का (ज्ञान) अपनी आत्मा को निरंतर जानता तो है ही लेकिन (अब) जगत को (भी) जानने लग गया। और जगत सारा न्यारा है, अत्यंत भिन्न है। उसको जानने को भगवान को कोई फायदा नहीं होता। वो प्रयोजनभूत नहीं है। प्रयोजनभूत केवल शुद्धात्मा है।

इसी तरह तेरा ज्ञान (जो है) वो भी तेरी शुद्धात्मा को जानने में समर्थ है इसलिए राग को भिन्न जानकर शुद्धात्मा... जब राग को भिन्न जान लिया तो सारे जगत को भिन्न जान लिया। अब जानने लायक केवल एक ये रह गया, तो वो शुद्धात्माभिमुख हो गया। तो जैसे भगवान केवली शुद्धात्मा को निरंतर जानते हैं इसी तरह ये भी निरंतर जानने लग गया। ज्ञानी सम्यग्दृष्टि हो गया।

महेंद्रभाई: अद्‌भुत! बाबुजी अद्‌भुत! अद्‌भुत! बाबूजी अद्‌भुत!

पूज्य बाबूजी: ये निश्चय से समानता है, अभी, इस समय। ये निश्चय से समानता हुई कि नहीं हुई? भगवान ज्यादा जानते हैं उससे उनको क्या मिला? मिला कुछ? कुछ नहीं मिला। शुद्धात्मा को जानते हैं वही है मोक्ष तो। इसी तरह मेरा ज्ञान (है)। तो ये जो राग से अत्यंत न्यारा है (ज्ञान).... राग परद्रव्य है, जड़ है, चेतन नहीं है, तो वो अलग पड़ा है चाहे दूर रहे (या) चाहे पास रहे। अगर राग मेरे साथ मोक्ष भी जाये तो मुझे objection (आपत्ति) नहीं है।

महेंद्रभाई: नहीं है। इतना न्यारा है! इतना न्यारा बाबूजी। आहाहा! अद्‌भुत! अद्‌भुत! बाबूजी अद्‌भुत! आहाहा! अद्‌भुत! मिलावट (नहीं है)। वो मिलान हो गया।

पूज्य बाबूजी: वहाँ भी बहुत परद्रव्य हैं, वहाँ भी बहुत परद्रव्य हैं। (मगर) क्या बिगड़ता है भगवान का? कुछ नहीं बिगड़ा।

महेंद्रभाई: कुछ नहीं, कुछ नहीं बिगड़ा। तो मेरे में क्या बिगड़ेगा? कुछ नहीं।

पूज्य बाबूजी: मेरे तो transfer (स्थानांतरण) है मोक्ष, मेरा तो यहीं मोक्ष है।

महेंद्रभाई: हाँ! यहीं मोक्ष है। वर्तमान में (मैं) मोक्ष स्वरूप हूँ।

पूज्य बाबूजी: हाँ! यहीं मोक्ष है मेरा तो। मेरा तो transfer है, कहीं कर दो। भाई! एक ही काम करना है मुझे तो। तो ज्ञानी का तो मोक्ष जाना (सिर्फ) transfer है। वो मानता ही नहीं है कि मेरा मोक्ष होगा। अगर मानता है तो मिथ्यादृष्टि है। अरे! मुक्त का क्या मोक्ष होगा?

महेंद्रभाई: आहाहा! मुक्त का क्या मोक्ष होगा? अद्‌भुत बाबूजी! अद्‌भुत!

पूज्य बाबूजी: बाजार में किसी अपने परिचित व्यक्ति से अपन कहें कि भाईसाहब! कब आये छूटकर? तो क्या होगा? कि मैं गया कब था?

महेंद्रभाई: गया ही कहाँ था? (और) तू बोलता है छूट गया।

पूज्य बाबूजी: तो सिर पर चप्पल होगी।

इसी तरह ज्ञानी को कहा जाये कि तेरा मोक्ष होगा। (तो कहे) कि मैं बँधा ही कब था?

महेंद्रभाई: आहाहा! अद्‌भुत बाबूजी! अद्‌भुत! बँधा ही कब था?

पूज्य बाबूजी: और मेरे को बँधन ही नहीं है। जड़ मेरे साथ कैसे बँधेगा चेतन के साथ? और मूर्त अमूर्त के साथ कैसे बँधेगा?

महेंद्रभाई: नहीं बँधेगा। तीनकाल में नहीं बँधेगा।

पूज्य बाबूजी: पड़ा रहे, कहीं पड़ा रहे। छह द्रव्य पड़े हैं। छह द्रव्य पड़े हैं जगत के, एक ही (जगह)। जहाँ मैं हूँ वहीं पाँच द्रव्य पड़े हैं, जहाँ हूँ (वहीं)।

महेंद्रभाई: कोई फर्क नहीं पड़ता।

पूज्य बाबूजी: कुछ फर्क नहीं पड़ता क्योंकि रहने की व्यवस्था (ही) ऐसी है। जगत थोड़ा है (और) पदार्थ बहुत हैं।

महेंद्रभाई: उसमें मैं न्यारा से न्यारा, न्यारा से न्यारा।

पूज्य बाबूजी: रहने के लिए केवल लोकाकाश है (और) पदार्थ अनंतानंत हैं। (तो) एक-एक प्रदेश कैसे मिलेगा उनको?

महेंद्रभाई: अद्‌भुत! जबरदस्त न्याय आया है बाबूजी, जबरदस्त।

पूज्य बाबूजी: इस तरह अरिहंत से समानता होती है। हाँ! ये जो कुछ नासमझ व्यक्ति पर्याय में (अरिहंत से) असमानता बताते हैं वो आचार्यों का महान तिरस्कार करते हैं, गाथा को नहीं समझकर। गाथा का पेट (रहस्य) नहीं समझकर! (अरिहंत और तेरी पर्याय) निश्चय से समान हैं।

महेंद्रभाई: निश्चय से समान हैं - इतनी बढ़िया बात कही (कि) निश्चय से समान हैं।

पूज्य बाबूजी: 'निश्चय' शब्द है वहाँ, 'व्यवहार' नहीं है। और उसमें फेरफार करते हैं लोग। फेरफार नहीं होता, वास्तविक है एकदम। आचार्य के वचन हैं; सामान्य फुटपाथ के व्यक्ति के नहीं हैं।

महेंद्रभाई: बराबर! असामान्य व्यक्ति हैं (आचार्य)।

पूज्य बाबूजी: इस तरह समानता बनती है। मेरा ज्ञान थोड़ा हो तो क्या हो?

एक व्यक्ति है। गाँव का ग्रामीण है, बिना पढ़ा-लिखा; उसको बुखार आ गया। और एक अच्छा प्रोफेसर है M.A. पास M.A. Phd.....

महेंद्रभाई: सब उपाधियाँ लेकर बैठा है।

पूज्य बाबूजी: College का; (तो) उसको भी बुखार आ गया। तो ये दोनों बुखार के दर्द को बराबर जानते हैं कि नहीं जानते? क्यों ग्रामीण में तो कोई ज्ञान नहीं है। तो वो नहीं जानता होगा कि मेरे (को) दर्द हो रहा।

महेंद्रभाई: ऐसा नहीं है।

पूज्य बाबूजी: ऐसा नहीं है। दोनों समान जानते हैं।

महेंद्रभाई: आहाहा! क्या comparison किया बाबूजी! (क्या) बताया आपने! अद्‌भुत! इसी तरह से....

पूज्य बाबूजी: दोनों समान हैं। ये बिना पढ़ा-लिखा बिल्कुल और कोई ज्ञान नहीं (है) इसको।

महेंद्रभाई: सही बात है! अनपढ़ है वो।

पूज्य बाबूजी: इस तरह मेरा श्रुतज्ञान (और) भगवान अरिहंत का केवलज्ञान दोनों समान हैं। समान (ता) में अनुभूति होती है। अनुभूति में रंचमात्र अंतर नहीं है। आनंद में अंतर है; (तो कहें) कि आनंद में होगा अंतर। मेरे भीतर तो अटूट आनंद भरा है। अभी भरा है, अभी भरा है। मुझे वो चाहिए ही नहीं, नया आनेवाला।

महेंद्रभाई: नया प्रगट होनेवाला नहीं चाहिए मुझे।

पूज्य बाबूजी: मुझे नहीं चाहिए। वो तो पर्यायदृष्टि है।

महेंद्रभाई: अपूर्व न्याय है बाबूजी! अपूर्व बात निकल गई है आज। अपूर्व बात!

पूज्य बाबूजी: अरे! आप लोगों का obligation है ये।

महेंद्रभाई: बाबूजी! ऐसा मत कीजिए। आप हमारे लिए इतना कष्ट लेते हैं बाबूजी। हमें तो ऐसा होता है.... लेकिन क्या करें इतना राग है। भाव था, आने का (भाव) था और आपके मुँह से ऐसी बातें सुनकर आज हमारा तो जीवन सफल हो गया बाबूजी।

ये इतनी प्रयोजन (भूत) बात आपने आज कर दी है बाबूजी कि - किस तरह से मिलान है, किस तरह से। तू फेर क्यों देखता है तेरे और केवली में? फेर है ही नहीं। तेरे पास ही इतना ज्ञान मौजूद पड़ा है। भले कम हो तो क्या हुआ? परिपूर्ण है तू।

पूज्य बाबूजी: परिपूर्ण, परिपूर्ण। आत्मा अनादि से है कि नहीं? है! तो वो आत्मा है तो सही, लेकिन पूरा है कि नहीं है? (पूरा है) और अगर पूरा नहीं मानते हो तो ये बताओ कि जगत में कोई अधूरा पदार्थ है क्या? सारे विश्व में जड़ और चेतन में कोई अधूरा पदार्थ बता दो।

महेंद्रभाई: नहीं। है ही नहीं।

पूज्य बाबूजी: बता दो कोई आधा घोड़ा और आधा गधा।

महेंद्रभाई: हो ही नहीं सकता।

पूज्य बाबूजी: है ही नहीं।

तो वो जो आत्मा है अनादि से, वो पर्याय (भले) कुछ भी बोलती होगी। लेकिन वो जो द्रव्य है, वो अनादि से पूरा आत्मा है या नहीं? तो पूरा है तो फिर क्या कमी है उसमें? उसे चेतन होने के लिए जितनी सामग्री, जितने गुण अनंतानंत चाहिए वो सब उसमें मौजूद हैं। पर्याय कुछ भी बोलती होगी, चिल्लाती होगी उसको। असल में तो उस आत्मा के साथ पर्याय इसलिए है कि वो आत्मा का सही परिचय दे। केवल परिचय देने के लिए पर्याय है। द्रव्य में कुछ नहीं करना है, ना जोड़ना है, ना घटाना है, ना plus करना है (और) ना minus करना है। पर्याय में ताकत नहीं है कि वो plus-minus कर दे। वो तो (बस) परिचय दे। लेकिन वो अनाचारिणी है इसलिए अनादि से गलत परिचय देती आई है। शुद्ध को अशुद्ध कहती है।

मिथ्यादर्शन के लिए भी आत्मा को शुद्ध होना चाहिए, तब मिथ्यादर्शन हो सकता है।

महेंद्रभाई: शुद्ध तो है ही, तो होना कहाँ है? आहाहा! अद्‌भुत बाबूजी! अद्‌भुत! क्या न्याय है?

पूज्य बाबूजी: कैसे होगा? कि शुद्ध को अशुद्ध कहना ही तो मिथ्यादर्शन है। शुद्ध को अशुद्ध मानना ही तो मिथ्यादर्शन है। अब अगर वो शुद्ध ही नहीं है तो ये किसको अशुद्ध कहेगा? इसलिए मिथ्यादर्शन के लिए भी शुद्ध होना चाहिए आत्मा को।

महेंद्रभाई: जबरदस्त बाबूजी! अपूर्व बात! अपूर्व बात आ गई आज। ओहोहो! उसका काम केवल परिचय देना है, वो भी जैसा है वैसा (परिचय)।

पूज्य बाबूजी: बस! वो ही है।

जैसे कोई शादी करके लाया। आज शादी करके लाया, अब वो कल भाग गई। तो भाग गई वो। (तो) वो क्या करे वो? उसके वश की बात थोड़े ही है। वो अलग चीज है, तो उसकी आजादी है कि वो भाग गई। लेकिन घर का तो कुछ नहीं बिगड़ा न!

महेंद्रभाई: कुछ नहीं। शादी के पहले भी वैसा था और बाद में भी वैसा है।

पूज्य बाबूजी: वही है, वही है। इस तरह पर्याय एक अलग परिचय देती है तो पर्याय की आजादी है इतनी। क्योंकि द्रव्य-गुण-पर्याय तीन न्यारे-न्यारे स्वभाववाले हैं, एक पदार्थ के होने पर भी न्यारे-न्यारे स्वभाववाले हैं। तो उसका स्वभाव ये है कि वो विकारी होकर चिल्लाती है (कि) अशुद्ध है, अशुद्ध है, अशुद्ध है।

महेंद्रभाई: चिल्लाने दो, हमें क्या?

पूज्य बाबूजी: कुछ नहीं उसका कुछ नहीं होता। उसको (तो) छूती भी नहीं है।

महेंद्रभाई: न्यारा-न्यारा है तो छुएगा कैसे? बराबर?

पूज्य बाबूजी: कैसे छुएगा? एक द्रव्य के होने पर भी मिलावट नहीं होती तीनों में।

महेंद्रभाई: नहीं होती बाबूजी, नहीं होती।

पूज्य बाबूजी: तीनों के स्वरूप न्यारे-न्यारे हैं।

अद्‌भुत दर्शन है! अद्‌भुत ही बातें हैं। अद्‌भुत दर्शन है!

महेंद्रभाई: प्रवचनसार की ८० गाथा में तो पूरा बाबूजी, जैनदर्शन आ गया (है)।

पूज्य बाबूजी: सब कुछ आ गया।

महेंद्रभाई: पूरा जैनदर्शन आ गया।

पूज्य बाबूजी: पूरा आ गया।

महेंद्रभाई: बाबूजी! एक प्रश्न पूछुँ (कि) कारण शुद्धपर्याय का थोड़ा कुछ क्या प्रयोजन है जानने का कि जिससे जीव को already अपने शुद्धात्मा के प्रति उसका सहजरूप से लगाव हो जाये और मैं भगवान हूँ - इस भाव पर रह जाये?

पूज्य बाबूजी: आगम की आज्ञा से कारण शुद्धपर्याय स्वीकार कर लेना। बाकी कारण शुद्ध पर्याय के भीतर (ज्यादा) नहीं घुसना। अगर वो स्वीकृत नहीं होती है, हमको पता नहीं है तो (भी) वो सम्यग्दर्शन होने में कोई बाधक नहीं है। बाधा नहीं (आती) है। इसलिए कारण शुद्ध पर्याय है आगम में

और परम सत् है, बस इतनी बात रखना। उसके स्वरूप में ज्यादा जाने की कोशिश नहीं करना।

उसमें क्या है कि हमारा ज्ञान इतना दुर्मेध है कि जो कठिन बात है, जो सत्य है (वो) बड़ी मुश्किल से प्रविष्ट होती है। हमारे ज्ञान में बड़ी मुश्किल से सत्य बात प्रविष्ट होती है। और वो (कारण शुद्ध पर्याय) आगम में सब जगह नहीं मिलती है। एक जगह मिलती है (बस) एक-दो जगह। तो बस! इसलिए उसको जानकर चुप कर देना। वो तो सम्यग्दर्शन होगा तो वो साथ ही है कारण (तो), द्रव्य के (साथ); कारण द्रव्य के साथ ही है। इसलिए ज्ञान को कठिन बात जो प्रयोजनभूत नहीं है (उसमें मत उलझाना)। वो प्रयोजनभूत नहीं है। तुम्हारी बुद्धि में आने लायक नहीं है वो। इसलिए उसमें ज्ञान को लगाकर और कष्ट नहीं देना। **ज्ञान को दुःख नहीं देना। ज्ञान को प्रसन्न रखना।**

महेंद्रभाई: वाह रे वाह, बाबूजी! अद्‌भुत! अद्‌भुत! पूरा ख़ुलासा हो गया।

पूज्य बाबूजी: कठिनाईयों में नहीं जाना बिल्कुल। ४७ शक्तियाँ, ४७ नय - इस तरह के ये जो कठिन विषय हैं इनमें नहीं जाना।

महेंद्रभाई: बराबर बाबूजी! बराबर!

पूज्य बाबूजी: बच्चों को ४७-४७ शक्तियाँ याद करवाते हैं (वो) गलती करते हैं। क्या फ़ायदा है उससे? अनंतानंत शक्तियाँ हैं। क्या होगा ४७ (शक्तियों) से? कुछ देखना हो (तो) शास्त्र देख लो। समाधान कर लो, बस! हो गया। अब तो समाधान करनेवाले भी चले गए। अब नहीं है कोई विद्वान ऐसा।

महेंद्रभाई: क्या बोलें बाबूजी आपके पास तो ...

पूज्य बाबूजी: इसलिए ज्ञान को प्रसन्न रखना, प्रसन्न होना चाहिए। जहाँ शुद्धात्मा के लिए प्रयोजनभूत बात है उस प्रयोजनभूत बात में अगर प्रसन्नता नहीं है, प्रीति नहीं है तो आत्मदर्शन-सम्यग्दर्शन नहीं होगा। इसलिये ज्ञान को दुःख नहीं देना। हम कठिन विषयों में जाते हैं (कि) ये भी पढ़ा, ये भी पढ़ा, वो भी पढ़ा। अरे! पढ़कर-पढ़कर क्या हुआ तेरे (को)?

महेंद्रभाई: कुछ नहीं। कुछ नहीं। जैसा था वैसा ही रहा। कोई फ़र्क नहीं पड़ा।

पूज्य बाबूजी:

तत्प्रति प्रीतिचित्तेन, येनवार्ताऽपि हि श्रुता।
निश्चितं स भवेद्भव्यो, भाविनिर्वाणभाजनम्॥२३॥
(पद्मनन्दि पंचविंशतिका, एकत्वसप्तति अधिकार गाथा २३)

संस्कृत श्लोक ये शिवभूति मुनि का उदाहरण याद रखना। श्रुतियों का शास्त्रों का आगम का पार नहीं है ***संस्कृत श्लोक*** (और) काल बहुत थोड़ा है। ज्यादा कल्पना मत करना कि अभी तो मैं १५ वर्ष का ही हूँ, अभी तो ३० वर्ष का ही हूँ। इसलिए काल थोड़ा है। ***संस्कृत श्लोक*** हम दुर्मेध हैं (अर्थात्) बहुत कठिन है हमारी बुद्धि। बड़ी जटिलता से प्रवेश करती है (अंदर) सत्य बात और प्रिय बात। ***संस्कृत श्लोक*** इसलिए जल्दी से वह बात सीख लो जिससे जन्म और मरण का क्षय हो। ज्यादा शास्त्र पढ़ने की चिंता मत करो (कि) ये भी पढ़ा ये भी। अरे! अंतर्मुहूर्त में तो केवलज्ञान हो

जायेगा तो सब देख लेना।

महेंद्रभाई: आहाहा! अद्‌भुत अद्‌भुत! वाह बाबूजी! अद्‌भुत! अद्‌भुत! आ गया इसमें सब कुछ।

पूज्य बाबूजी: सब कुछ आ गया। क्या अलग-अलग शास्त्र देखता है? कहाँ तक देखेगा? पार नहीं है।

महेंद्रभाई: चक्रावह में पड़ जायेगा।

पूज्य बाबूजी: हाँ! चक्कर आयेंगे। कठिन विषय आ जायेगा उसमें उलझ जायेगा, समय गँवा जायेगा।

महेंद्रभाई: उसका अर्थ करने में पूरा समय चला जायेगा।

पूज्य बाबूजी: चला जायेगा। कोई समाधान करनेवाला रहा नहीं (है) अब। अब अपनी बुद्धि को सूक्ष्म और तीक्ष्ण बनाओ। विस्तार मत दो बुद्धि को। ज्ञान का विस्तार मत करो। सूक्ष्म और तीक्ष्ण करो क्योंकि आत्मा सूक्ष्म और तीक्ष्ण है। वो उससे पकड़ में आएगा।

अभव्य थे, मुनिसागर थे, सारे आगम पड़े थे ११ अंग सब, लेकिन सम्यग्दर्शन को प्राप्त नहीं हुये। और शिवभूती मुनि ***संस्कृत श्लोक*** तुष और मास, छिलका और दाल। बस! ये छिलका और दाल का विचार करते हुए भेदविज्ञान में पहुँच गए और अंतर्मुहूर्त में केवलज्ञान ले लिया। ***संस्कृत श्लोक*** निश्चित रूप में केवलज्ञानी हो गए। और वो हस्ताक्षर करना नहीं जानते थे।

महेंद्रभाई: नहीं जानते थे, सही बात है। इसलिए ज्यादा जरूरत नहीं है।

पूज्य बाबूजी: ज्यादा जरूरत नहीं है।

महेंद्रभाई: बस! बस इतना जान लिया कि छिलका और दाल न्यारे-न्यारे हैं, बस! यहाँ भेदज्ञान शुरू हो गया।

पूज्य बाबूजी: बस! एक स्त्री नदी में दाल धो रही थी तो वहाँ पहुँच गए वो। उन्होंने कहा - किम् करोति भवति? क्या करती हो? क्या कर रही हो? (उसने कहा) कि दाल को छिलके से अलग कर रही हूँ। बस! बैठ गई बात। और उसके बाद....

महेंद्रभाई: बैठ गई बात। अलग ही तो हैं।

पूज्य बाबूजी: अलग ही हैं।

महेंद्रभाई: अद्‌भुत! अद्‌भुत! ज्यादा विषयों में मत उलझो।

पूज्य बाबूजी: समय नष्ट नहीं करना।

महेंद्रभाई: नहीं मत करना। काल बहुत कम है।

पूज्य बाबूजी: चार अनुयोग हैं। चार अनुयोग में चारों अनुयोग उपादेय नहीं है। तीन अनुयोग हेय और एक अनुयोग उपादेय है।

महेंद्रभाई: द्रव्यानुयोग।

पूज्य बाबूजी: द्रव्यानुयोग।

महेंद्रभाई: बराबर बाबूजी।

पूज्य बाबूजी: भगवान के वचन (हैं तीनों) और हेय (हैं) तीन अनुयोग।

महेंद्रभाई: उनको हेय क्यों किया? उसको हेय क्यों कहा?

पूज्य बाबूजी: वो शुद्धात्मा से न्यारे हैं सारे, मेल नहीं खाते। शुद्धात्मा का प्रकरण नहीं है उनमें। उनका विषय अलग है, अनमेल हैं शुद्धत्मा से। **इसलिए हिचक नहीं करना।**

महेंद्रभाई: हिचक नहीं करना ये important बात है बाबूजी। उसको (तीन अनुयोग को) हेय बोलने में हिचक मत करना।

पूज्य बाबूजी: हिचक नहीं करना। जिनवाणी में तो मोह-राग-द्वेष भी कहे। तो तू मोही है, रागी है, द्वेषी है - ऐसा बोला है, ऐसा आया है। आया है कि नहीं आया? आया है। तो जिनवाणी के वचन मान लें कि है रागी?

महेंद्रभाई: अरे बाबूजी! क्या बोला! अद्‌भुत! अद्‌भुत! अद्‌भुत! ये पूरी-पूरी मिलान जैसी बात हो गई कि अरिहंत के द्रव्य-गुण-पर्याय और मेरे द्रव्य-गुण-पर्याय (एक जैसे हैं)। तो मेरे में राग है कहाँ? तो फिर ये बात क्यों मानेगा? मानेगा तो ऐसा है ही है, तेरे लिए वो बराबर है।

तो बाबूजी ऐसा क्यों कहा है कि चारों अनुयोग का फल वीतरागता है?

पूज्य बाबूजी: अन्य में नहीं होते मोह-राग-द्वेष। बुखार जो है वो.... अगर एक व्यक्ति का statue (मूर्ति) बना दिया जाये और उसको धूप में रख दिया जाये और वो गरम हो जाये, तो उसको बुख़ार आया कि नहीं आया? आया क्या बुखार?

महेंद्रभाई: नहीं आया।

पूज्य बाबूजी: और उस व्यक्ति को ठंड लग गई तो उसको आ गया है बुख़ार। आया कि नहीं आया?

महेंद्रभाई: आया।

पूज्य बाबूजी: क्योंकि (वो) हाय-हाय कर रहा है, हाय-हाय कर रहा है।

तो दोनों हैं न बातें हैं कि वो उसका statue है तो भी गरम हो गया, तो भी बुख़ार नहीं आया। तो मोह-राग-द्वेष वो आत्मा के असंख्य प्रदेशों में ही पैदा होते हैं इसलिए आत्मा को मोही-रागी-द्वेषी कहा। (लेकिन) इसी को आया (है) बुख़ार, ये। उसके साथ जो आठ कर्म हैं उनको नहीं आया। तो वो आत्मा में ही उत्पन्न होते हैं।

जैसे बीज जो है (वो) मिट्टी में ही पैदा होता है, शिलाओं पर पैदा नहीं होता। इसी तरह मोह-राग-द्वेष वो चेतन की पर्याय में ही पैदा होते हैं। लेकिन सारा चेतन वो मोही-रागी-द्वेषी नहीं होता। और उसके साथ जो दूसरे जड़ पदार्थ हैं, उनमें (भी) नहीं होता। इसलिए (उसको) कहा मोही-रागी-द्वेषी। अब वो (यदि) ये मान ले कि मोह-राग-द्वेष हुए ही नहीं (हैं) मेरी पर्याय में तो, तो फिर वो शुद्धात्मा की ओर क्यों झाँकेगा?

महेंद्रभाई: बराबर है। तो मानना तो पड़ेगा और साथ में (ये मानना होगा कि) मेरे ....

पूज्य बाबूजी: क्योंकि शुद्धात्मा की ओर झाँकने से वो नष्ट हो जाते हैं, भाग जाते हैं। आदमी जो

है उसको बुखार आया तो वो बुखार की ओर देखता रहे तो बुखार नहीं उतरेगा। वो बुखार की ओर देखना बंद करे और केवल एक गोली ले ले, एक गोली, और गोली की ओर झाँके तो बुखार चला जायेगा। तो वो आत्मा की ओर झाँके तो मोह-राग-द्वेष चले जाएँगे।

महेंद्रभाई: चले जायेंगे। बराबर! एक चैतन्य की ओर (झाँके तो)।

पूज्य बाबूजी: आत्मा राग का क्षय नहीं कर सकता (है), राग की ओर देखकर। मोह का क्षय नहीं कर सकता (है), मोह की ओर देखकर। शुद्धात्मा की ओर झाँके तो उसका नाश हो जायेगा। तो जो अपना ध्यान करने से मर जाये तो उसका ध्यान क्यों करना?

महेंद्रभाई: सही बात है! सही बात है! उसकी आयु वहाँ ख़त्म हो जाती है जहाँ ऐसा आया। सही बात है।

पूज्य बाबूजी: उसकी विधि कैसी सुंदर है कि जिसका नाश करना है उसकी ओर मत झाँको। उसमें आड़ दे दो, आड़ और इसकी ओर झाँको (तो) वो ख़त्म हो जायेगा। कितना सरल!

महेंद्रभाई: सरलतम, सबसे सरल।

पूज्य बाबूजी: युद्ध नहीं करना है, युद्ध नहीं करना। नाश भी शांति से होगा। आनंद में केलियाँ करते हुए नाश होगा।

महेंद्रभाई: वाह! वाह! बाबूजी वाह! एक चैतन्य का चमत्कार!

पूज्य बाबूजी: हाँ! चैतन्य का चमत्कार।

महेंद्रभाई: कितनी सरल विधि है बाबूजी कि - अपनी ओर झाँको तो उसकी उत्पत्ति ही नहीं है। नाश करने की तो बात ही कहाँ रही? उत्पत्ति ही नहीं होती बाबूजी। आहाहा! अद्‌भुत!

पूज्य बाबूजी: बहुत ही बढ़िया विधि है। बहुत ही सुंदर विधि है। राग का नाश करो, मोह का नाश करो ये....

महेंद्रभाई: ये विधि है ही नहीं।

पूज्य बाबूजी: नहीं है विधि, नहीं है विधि। ये चलता था गुरुदेव के पहले, मिथ्यादर्शन।

महेंद्रभाई: बराबर! बराबर! ज्ञानी तो बोलते हैं कि हमने अंदर डुबकी मारी लेकिन हमको राग-बाग मिला नहीं। हो तो मिले न! चैतन्य की ओर झाँका, बस! आपने जो बोला न यही विधि (है)।

पूज्य बाबूजी: यही, एक ही विधि। एक ही विधि। ज्वर की ओर मत झाँको, वो जायेगा नहीं। मर ही जाओगे तुम, लेकिन वो जायेगा नहीं। बस! ये जान लो कि ज्वर है, बस इतना। अब कैसे जायेगा? कि मैं देख लूँगा। मैं देख लूँगा कैसे जाता है। तो उससे उल्टा tablet (दवाई) ली बस। लोक की विधियाँ भी ऐसी हैं।

महेंद्रभाई: तो इतना कठिन क्यों हो पड़ा बाबूजी?

पूज्य बाबूजी: निरंतर केवल एक ही तरफ झाँकना। निरंतर, अनंतानंतकाल तक।

महेंद्रभाई: धारावाही!

पूज्य बाबूजी: दु:ख पास नहीं आ सकता, विकार पास नहीं आ सकता। सम्यग्दर्शन हुआ तब से

झाँकना शुरू किया, अब ये अनंतानंत काल तक चलता रहेगा। अपन लोग कहते हैं कि (क्या) कुछ नहीं करें, कुछ नहीं करें? अरे! करने की बात तो मौत है यहाँ। करने (के) नाम की बात नहीं है। यहाँ तो ज्ञायक द्रव्य और ज्ञान - ये है जीवन पूरा। जो ज्ञान है.... ज्ञायक द्रव्य तो है ही अकर्ता, लेकिन जो ज्ञान है वो ज्ञान भी निष्क्रिय है। निष्क्रिय है!

महेंद्रभाई: वाह रे वाह! निष्क्रिय है?

पूज्य बाबूजी: निष्क्रिय है!

महेंद्रभाई: किस तरह से बाबूजी?

पूज्य बाबूजी: वो कर्म नहीं है। (ज्ञान) कर्म नहीं है, कर्म तो राग है। कर्म तो राग है क्योंकि उसमें सुनने की बात है। कर्म में करना ही करना दिखता है कि ये मेरे मोह-राग-द्वेष हैं (तो) मैं इनका नाश करूँगा संवर-निर्जरा-तप-ध्यान के द्वारा और फिर मोक्ष चला जाऊँगा। ये करना ही करना है उसका नाम राग (है)। ये राग है, कर्म कहते हैं उसको। और जो ज्ञान है उस ज्ञान में कुछ करना ही नहीं है। द्रव्य और गुण में तो नहीं करना (है) लेकिन ये चलनेवाली पर्याय में भी कुछ नहीं करना है। ये भी कर्म कहलाती है। द्रव्य कर्ता (और) पर्याय कर्म कहलाती है न? तो इसी तरह से ज्ञान की पर्याय को भी कर्म कह देते हैं। लेकिन वो ज्ञान की वर्तमान पर्याय वो भी निष्क्रिय है, द्रव्य और गुण की तरह निष्क्रिय है। क्योंकि उसका जो विषय है.... (चाहे) कोई भी पदार्थ हो, उसका जो विषय है उसमें उसने (ज्ञान की पर्याय ने) क्या किया?

महेंद्रभाई: कुछ नहीं।

पूज्य बाबूजी: कुछ नहीं किया इसलिए वो भी निष्क्रिय है। इसलिए द्रव्य-गुण-पर्याय तीनों निष्क्रिय हैं। तो ज्ञान निष्क्रिय है (और) राग कर्म है, सक्रिय है। और वो आत्मा के स्वरूप के विरुद्ध है, विपरीत है। ये ज्ञान और राग में अंतर है। वो (राग) संबंध जोड़ता हुआ आता है (और) ये (ज्ञान) संबंध तोड़ता हुआ आता है।

महेंद्रभाई: अद्‌भुत! यही ज्ञान और राग का वास्तविक स्वरूप है।

पूज्य बाबूजी: वास्तविक स्वरूप! वो तो करने ही करने को लेकर चलता है। ये करने की बात ही नहीं है यहाँ। इसके स्वरूप में (वो बात) ही नहीं है।

महेंद्रभाई: सही बात है।

पूज्य बाबूजी: बस! ये ज्ञान और राग का अंतर यही सम्यक्त्व है, कि यही सम्यक्त्व है। अंतर जानना यही सम्यक्त्व है।

मुमुक्षु: बाबूजी! बहुत बढ़िया बात, बहुत बढ़िया।

संबंध जोड़कर खड़ी होती है वो तो गलत बात है। और ये इसमें सक्रियपना है और एक निष्क्रियपना यही है ज्ञान, बस। इसमें कोई मिलावट नहीं है, कोई संबंध नहीं है।

पूज्य बाबूजी: मिथ्याज्ञान यानि उसने सब कुछ ओढ़ रखा है। छहों द्रव्यों को यहाँ अपने साथ मिला रखा है। मिला रखा है माने? मानता है (और) जानता है, ऐसा। सब मेरे हैं, मेरे पास हैं, मेरे साथ

हैं। जब सम्यग्ज्ञान का उदय होता है तो सारा विश्व तोड़ दिया अलग-अलग, न्यारा-न्यारा (कर दिया)। इसने नहीं तोड़ा, उसका स्वरूप ही था (तो) बस, जान लिया न्यारा-न्यारा। तो ये तोड़ता हुआ पैदा होता है।

महेंद्रभाई: आहाहा! क्या बाबूजी! गजब बात! ये तोड़ता हुआ पैदा होता है (और) वो जोड़ता हुआ पैदा होता है।

पूज्य बाबूजी: अज्ञान और राग जोड़ते हुए पैदा होते हैं।

महेंद्रभाई: आहाहा! अद्‌भुत बाबूजी, अद्‌भुत!

पूज्य बाबूजी: और जोड़ता (तो) है (ही) नहीं, विश्वमात्र, सारे विश्व में। सब स्वतंत्र भिन्न -भिन्न, न्यारे-न्यारे, अपनी-अपनी सीमा में (हैं) और सीमा sealed है।

महेंद्रभाई: Sealed, cannot be encroached (अतिक्रमण नहीं किया जा सकता)। Encroachment (अतिक्रमण) नहीं हो सकता।

पूज्य बाबूजी: हाँ! कुछ नहीं हो सकता।

महेंद्रभाई: बराबर! बराबर! बाबूजी! जबरदस्त comparison (तुलना) - तोड़ता हुआ और जोड़ता हुआ। आहाहा! ऐसा ही स्वरूप है।

पूज्य बाबूजी: ज्ञानी को संपूर्ण विश्व के प्रति उपेक्षाभाव होता है।

महेंद्रभाई: उपेक्षाभाव रहता है, बराबर! बराबर।

पूज्य बाबूजी: संपूर्ण विश्व के प्रति। एक मात्र मेरा शुद्ध चैतन्य, ये तो न्यारा पड़ा ही है। लेकिन और जितना कुछ विश्व है, सारा का सारा (उसके प्रति) उपेक्षाभाव, उपेक्षाभाव है। ज्ञेय कहते हैं (उसको).... कि ये मेरा ज्ञेय है। ज्ञेय तो कर्ता-कर्म भाव के अज्ञान का नाश करने के लिए ज्ञेय कहा है, वास्तव में ज्ञेय नहीं है। क्योंकि ज्ञेय बनाने से ज्ञेय-ज्ञायक संबंध स्थापित होकर मिथ्यात्व का जन्म होगा।

महेंद्रभाई: अद्‌भुत!

पूज्य बाबूजी: मेरा ज्ञेय - तो संबंध नहीं यहाँ तो निषेध किया। और तूने ज्ञान के नाम पर ज्ञाता-ज्ञेय संबंध स्थापित कर दिया। आचार्य ने साफ लिखा है प्रवचनसार की २०० गाथा की टीका में, जयसेनाचार्य ने (कि) निश्चय से ज्ञेय-ज्ञायक संबंध नहीं है।

महेंद्रभाई: नहीं है। निश्चय से नहीं है।

पूज्य बाबूजी: गाथा में आया है ज्ञेय-ज्ञायक संबंध, वो व्यवहार है। वो निश्चय नहीं है।

महेंद्रभाई: निश्चय नहीं है।

पूज्य बाबूजी: तो शास्त्र में ज्ञेय तो कहा है - ऐसा अपन कहते हैं। और पदार्थ जानने में तो आते हैं, केवलज्ञान थोड़ी (ना) हो गया (है) अभी। जानने में तो आते हैं, फिर क्या करें?

कहते हैं कि अभी ये जान लिया कि ये मात्र मेरा ज्ञेय है अर्थात् (वह) जाननेमात्र ही वस्तु है और मेरा कोई उसके साथ संबंध नहीं (है), आदान-प्रदान नहीं (है)। ऐसा जान लिया तो उसकी ओर झाँकना बंद हो जाता है। और कहे कि देखने में आते हैं उनका क्या हुआ? (तो) कहते हैं (कि) वो

उपेक्षाभाव है इसलिए अनजाने के समान हैं। उपेक्षा से जानी गई चीज वो जानी गई नहीं कहलाती (है)। तो ज्ञेय को जानकर क्या जाना? कि ज्ञेय को जाना कि ये तो मेरा ज्ञेय है। अतः अत्यंत परद्रव्य है, इससे मेरा रंचमात्र कुछ भी प्रयोजन सिद्ध नहीं होता है। ऐसा जाना तो फिर क्या जाना? कि ये जाना कि **अब जाना सो जाना, अब जानना ही नहीं है।**

महेंद्रभाई: वाह बाबूजी! वाह बाबूजी! वाह वाह! खतम हो गई बात यहाँ से।

पूज्य बाबूजी: खतम हो गई। सारा जगत खतम, एक ओर।

महेंद्रभाई: जाना तो जाना। (तो) क्या जाना?

पूज्य बाबूजी: ये जाना कि **अब नहीं जानना है।**

महेंद्रभाई: बस!

पूज्य बाबूजी: क्या जाना ज्ञेय को जानकर? (कि) ये जाना; **ये जाना कि अब नहीं जानना।** अरे! ये जान लिया कि ये परस्त्री है तो उसको ज्ञेय बनाना क्या?

महेंद्रभाई: सवाल ही नहीं है।

पूज्य बाबूजी: हो गया न खतम कि अब झाँकना ही नहीं है। और अगर सामने पदार्थ आये भी सही तो वो तो अनजाने के समान है क्योंकि मेरा (उससे) अत्यंत उपेक्षा भाव (है), परत्व है। परत्व है। जहाँ परत्व हो गया वहाँ मोक्ष हो गया, निहाल हो गया।

महेंद्रभाई: वाह रे वाह! अद्‌भुत! अभिप्राय छूट गया।

पूज्य बाबूजी: कोई ज्ञेय नहीं है ये ज्ञेय है, सदा। ये ही ज्ञान, ये ही ज्ञाता (और) ये ही ज्ञेय।

महेंद्रभाई: ये बाबूजी! इस बात से सिद्ध हो गया पूरा, सिद्ध हो गया।

पूज्य बाबूजी: हाँ! किसी को ज्ञेय नहीं बनाना (है)। वो तो कर्ता-कर्म का अज्ञान छुड़ाने के लिए पर को ज्ञेय कहा (था)। अरे! ये तेरे कर्म नहीं हैं। तू इनका कर्ता नहीं है - रागादि का, छह द्रव्य का। ये तो मात्र ज्ञेय हैं, अतः जाननेमात्र हैं। वहाँ भी उपेक्षाभाव है, जाननेमात्र के बस। वो खतम हो गया। फिर जो जाननेमात्र की चीज है (तो) उसको क्या जानूँ मैं? अरे! कुछ मिलना ही नहीं है.... कि मिलना ही नहीं है कुछ तो मैं क्यों झाँकू उसकी तरफ?

महेंद्रभाई: सही बात है। माथा क्यों फोड़ूँ वहाँ?

पूज्य बाबूजी: क्यों रमूँ? क्यों समय नष्ट करूँ? क्यों पुरुषार्थ नष्ट करूँ? जिससे मिलना है उसकी ओर झाँकूँगा। जो at a glance (एक नजर में)..... तो एक बार झाँकते ही जो रीति (खाली) झोली को पूरा भर देता है, उसकी ओर झाँकूगा। अनादिकाल से झोली खाली है। सबके पास गया, भगवान सिद्ध के पास भी चला गया परंतु झोली खाली की खाली (रही)।

महेंद्रभाई: क्या देंगे वो?

पूज्य बाबूजी: क्या देंगे? (और) क्यों देंगे?

महेंद्रभाई: क्यों देंगे? अद्‌भुत! अद्‌भुत!

पूज्य बाबूजी: अरे! तू तो खुद ही भरा हुआ है। कहाँ रखेगा? मैं दूँगा तो कहाँ रखेगा? तेरे पास

जगह (ही) नहीं है।

पूज्य बाबूजी: वाह! अद्‌भुत! बाबूजी अद्‌भुत! अद्‌भुत!

पूज्य बाबूजी: फिर देनेवाला मूरख हुआ। किसी करोड़पति का लड़का अगर किसी दूसरे के यहाँ माँगने चला जाये तो वो उसे रोटी नहीं रखेगा। वो (तो) उसका हाथ पकड़कर उसके घर पहुँचायेगा।

भगवान तो हमारे घर पहुँचाते हैं। अगर देते हैं तो भगवान अपराधी हो गए। क्योंकि वो तो भिखारी का भिखारी रहा। (घर पहुँचाने से) अब भगवान बन गया। था ही भगवान।

महेंद्रभाई: भगवान ही था, (अब) बन गया।

पूज्य बाबूजी: अब बन गया।

महेंद्रभाई: याचक रुचि खतम हो गई।

पूज्य बाबूजी: सब कुछ खतम।

महेंद्रभाई: बाबूजी! बहुत बढ़िया बात कर दी। क्या देगा (और) क्यों देगा? और देगा तो वो अपराधी कहलायेगा।

पूज्य बाबूजी: अपराधी है वो।

महेंद्रभाई: बहुत अद्‌भुत जैनदर्शन बाबूजी!